विचार, वाणी और ...

ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी, मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए।

आचमन लेने का सौभाग्य प्राप्त हो और हर किसी के जीवन मे ये एक नई शक्ति के रूप में उभरे।

ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि आज दुनिया का कोई कोना ऐसा नहीं होगा जहाँ गुजराती न हो। हमारे ब्रह्माकुमारीज में भी कई गुजराती बहनों के पुरूषार्थ से विदेश की सेवा को बल मिला है। आज चंद्रिका बहन ने जिस सेवा का आरंभ किया है वह काफी सराहनीय है। हमारा ईश्वरीय यज्ञ धर्म, जाति, भाषा, प्रांत जैसे हर प्रकार के भेदों से परे होकर पूरे संसार को एक बनाने के लिये कार्य कर रहा है। हम एक परमात्मा पिता के बच्चे है, ये संस्कार हम डालकर चलेंगे तभी संसार एक बनेगा, श्रेष्ठ बनेगा। श्रेष्ठ संस्कार से ही बनेगा श्रेष्ठ संसार।

मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को ब्रह्माकुमारी संस्था के महासचिव ब्र.कु.निर्वैर संगमतीर्थ धाम का प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए।

ब्रह्माकुमारी संस्था के सचिव ब्र.कु.निर्वैर ने कहा कि जब तक हमारे अंदर नैतिक मूल्य नहीं आयेंगे तब तक भारत फिर से स्वर्ग नहीं बनेगा। इसके लिये युवाओं व बच्चों को राजयोग का प्रशिक्षण देना आवश्यक है। इससे भारत सर्वश्रेष्ठ बन जायेगा, भारत विश्व का नेतृत्व करेगा और इसके लिये नरेन्द्र मोदी जी भी निमित्त बनेंगे। हमारे यज्ञ में आज का दिन स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। संगम तीर्थ धाम आगे चलकर लाइट हाउस बन सारे विश्व की सेवा के लिये निमित्त बनेगा।

ब्रह्माकुमारी संस्था के आतिरिक्त साचिव ब्र.कु.बृजमोहन ने कहा कि गुजरात ने हमारे देश की परम्परा व सभ्यता को बनाये रखा है। गुजरातियों का रास प्रसिद्ध है। रास का मूल अर्थ ही यह है कि सभी युवा भाई-बहनें देह के भान को भूलकर कदम से कदम मिलाकर रास करें। ब्रह्माकुमारी संस्था में संस्कार मिलन की रास सिखाई जाती है। गुजरात की धरती पर गांधीजी ने सत्य और अहिंसा का पाठ पूरे विश्व को सिखाया। आज भले ही भौतिक विकास हुआ हो लेकिन समाज में मूल्यों की गिरावट होती जा रही है। आज प्रत्येक व्यक्ति को अंदर से जागने की आवश्यकता है। संगम तीर्थ धाम का शुभारंभ युवाओं को प्रशिक्षण देने के लिए किया जा रहा है ताकि विश्व से मानसिक प्रदूषण को समाप्त किया जा सके।

ब्रह्माकुमारी संस्था के युवा प्रभाग की अध्यक्षा दादी रतनमोहिनी ने कहा कि युवा शक्ति को आध्यात्मिकता द्वारा सकारात्मक दिशा देने के लिए यह धाम सतत प्रयत्नशील रहेगा।

गुजरात स्थित ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु.सरला ने कहा कि आध्यात्मिक युवा ही समाज व देश का हित कर सकता है।

ब्रह्माकुमारी संस्था के युवा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.चंद्रिका ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था के पास डेढ़ लाख से भी ज्यादा बाल ब्रह्मचारी युवा है। युवा प्रभाग का लक्ष्य ही यही है कि देश के ज्यादा से ज्यादा युवाओं को विश्व परिवर्तन के लिए तैयार करें। आज खुशी का दिन है कि युवा प्रभाग का वह सपना साकार हुआ और देश के युवाओं को सुसंस्कृत करने की शिक्षा देने के लिए संगम तीर्थ धाम का उद्घाटन होने जा रहा है।

मुकेश पटेल ने कहा कि ये भवन डिवाइन पावर हाउस बनेगा। यहाँ पर युवा शक्ति व आध्यात्मिक शक्ति का मिलन होगा।

दादी जानकी ने ब्रह्माकुमारी संस्था के उन भाई-बहनों को सम्मान सर्टिफिकेट दिया जिन्होने आध्यात्मिक ज्ञान में पच्चीस साल पूर्ण किए हैं।

शुभकामनाएँ

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

सर्व के कल्याणकारी परमात्मा शिव और दादीजी की सबल प्रेरणा से प्रारंभ हुई, जन-जन की चहेती, उत्कृष्ट चिन्तन की प्रबल प्रेरक 'ओमशान्ति मीडिया' अपनी सफल यात्रा के 13 वर्ष पूर्ण कर 14 वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। यह जानकर अति हर्ष हो रहा है कि ईश्वरीय अनुभवों को राजयोगी भाई-बहनों के माध्यम से सजीव अभिव्यक्ति देने वाली इस पत्रिका की मांग देश-विदेश में दिनोदिन बढ़ती जा रही है।

समयानुकूल ज्ञान, योग, धारणा और सेवा जैसे गूढ़ समझे जाने वाले विषयों को सरल, सुबोध और सुस्पष्ट व्याख्या देने वाली, जन-जन के हृदय को ज्ञान-अमृत से सींचने वाली इस पत्रिका को घर-घर पहुंचाने का कार्य आप सभी राजयोगी भाई-बहनें उमंग-उल्लास से करते रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे -यह मेरी शुभकामना है। श्रेष्ठ वृत्ति, दृष्टि, कृति की ओर प्रेरित करने का यह पत्रिका अत्युत्तम आधार है।

इस 'ओमशान्ति मीडिया' में जो भी भाई-बहनें अपना अमूल्य समय निकालकर लेख भेजते हैं, जो इसे सुंदर रूप देकर सब तक पहुंचाने का कार्य करते हैं, साथ-साथ जो इसे पढ़कर अपने चिन्तन को ऊर्ध्वगामी और शक्तिशाली बनाते हैं उन सभी को बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि ऐसी सेवाएं निरंतर करते हुए हर गाँव तथा हर व्यक्ति तक यह सुंदर पत्रिका पहुँचाकर आप उन्हें दिव्य जीवन बनाने के लिए प्रोत्साहित करते रहेंगे। यह भी बहुत बड़ा पुण्य है क्योंकि इसके माध्यम से अनेकों को जीवन में शांति व खुशी की सच्ची राह प्राप्त होती है।

अभी वर्ष 2013-2014 हेतु ओमशान्ति मीडिया के सभी प्रिय पाठकों से मैं कहूंगी कि आत्मिक उन्नति की ओर ले जाने वाले इस श्रेष्ठ माध्यम से जन-जन को ईश्वरीय संदेश देते हुए मानव मन को सकारात्मक बनाने की सेवा कर बापदादा का नाम बाला करें और बापदादा के साथ सर्व की दुआओं के पात्र बनें। दिनोदिन इसकी संख्या अधिकाधिक होती रहे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ...।

सद्गुणों से जीवन का श्रृंगार करें

जीवन रूपी वृक्ष पर यदि विभिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे पुष्प खिले हों तो उनकी सुगंध अवश्य ही समस्त विश्व में श्रेष्ठ चरित्र की सुवास फैलाएगी और उनका जीवन जिसमें कांटे उगे हों, अवश्य ही स्वयं को व दूसरों को चुभ-चुभकर लहूलुहान करेंगे। कांटें जहाँ हों, वहाँ चैन कहाँ और जहाँ पुष्प खिलें हों, वहाँ कड़वाहट कहाँ! सद्गुण युक्त जीवन स्वयं को भी व दूसरों को भी प्रिय लगता है। सद्गुण, जीवन रूपी इमारत में जड़े हुए बहुमूल्य हीरे-मोती हैं। सद्गुण-युक्त जीवन का मूल्य आँका नहीं जा सकता। तराजू में यदि एक ओर विश्व की समस्त पूँजी रखी जाए और दूसरे पलड़े पर सद्गुण रूप जीवन हो तो वह जीवन ही अधिक मूल्यवान होगा।

जहाँ एक ओर जीवन में हम अन्य अनेक वस्तुओं को मूल्य देते हैं वहीं श्रेष्ठ गुणों को भी महत्व दें। क्योंकि हम जितना जिस वस्तु को महत्व देते हैं, वह वस्तु उतनी ही हमारे जीवन में समाने लगती है। वे सद्गुण हैं -शालीनता, सन्तुष्टता, सादगी, निर्भयता, गंभीरता, साहस, आत्म-सम्मान, धैर्यता, सरलता, निरहंकारिता, दया और प्रेम। क्या इनमें से किसी भी एक गुण की कीमत को आंका जा सकता है? क्या साहस को करोड़ रूपये देकर खरीदा जा सकता है, क्या निर्भयता की कीमत चुकाई जा सकती है, क्या धैर्यता की तुलना धन से की जा सकती है और क्या संतुष्टता धन से प्राप्त हो सकती है? सभी कहेंगे नहीं। तो अथाह कीमत है जीवन में सद्गुणों की। तो आओ चिन्तन करें कि इन सद्गुणों को जीवन में कैसे लायें।

जिस घर में सभी सदस्य गुणवान हों अथवा गुण धारण करने के लिए सदा ही प्रेरित हों, वह परिवार समाज के लिए आदर्श व अनुकरणीय बन जाता है। परन्तु आश्चर्य की बात है कि वर्तमान समय में अधिकतर लोग जीवन में गुणों की धारणा के प्रति सचेत नहीं हैं। यदि किसी में कोई गुण नहीं है, तो वह उसे धारण करने का प्रयास ही नहीं करते। परन्तु विवेकशील प्राणी को स्वयं को सद्गुणों से सम्पन्न बनाने का पुरूषार्थ करना चाहिए।

एक गुणवान व्यक्ति यदि गरीब भी है तो वह उस धनवान से अच्छा है जो धन के नशे में गुण रूपी मोतियों की माला अपने गले में नहीं डालता। गुण मनुष्य को आत्म संतोष प्रदान करते हैं और जीवन में खुशी व शान्ति का अनुभव देते हैं और वह मनुष्य जिसका चेहरा सदा ही मुरझाया रहता हो, जिस पर सदा ही मनहूसियत सवार रहती है, कभी भी जीवन का आनंद नहीं ले पाता। इसलिए जीवन को सद्गुणों से इतना श्रृंगार करो कि संसार के समस्त कृत्रिम श्रृंगार नीरस पड़ जाएं।

शालीनता - मानव एक सभ्य प्राणी है, उसमें आत्म-सम्मान की भावना कूट-कूट कर भरी है, अत: प्रत्येक मनुष्य को अपना खान-पान, बोल-चाल, व्यवहार-विचार सभी रॉयल बनाने चाहिए। हमारा व्यवहार ही ऐसा हो कि देखने वाले हमें सभ्य मनुष्य मानें। व्यवहार में जल्दबाजी, दूसरों के प्रति अपमान-जनक शब्दों का प्रयोग, अशिक्षित लोगों जैसा उठना, घड़ी-घड़ी क्रोध, दूसरों की बातों को धैर्यता से न सुनना, बिना पूछे ही बोलना या ज्यादा बोलना - ये सब शालीनता नहीं है। एक शालीन व्यक्ति को शालीनता से ही चलना चाहिए। दूसरे भले ही हमसे कैसा भी व्यवहार करें, परन्तु हम अपनी शालीनता न छोड़ें। एक शालीन व्यक्ति दूसरे से कुछ भी माँगता नहीं। वह थोड़े में ही संतुष्ट रहता है। दूसरों द्वारा अपमानित होने पर भी वह उत्तेजित नहीं होता। उसके व्यवहार में महानता के दर्शन होते हैं, वह न बुरा बोलता, न बुरा सुनता है। तो इस प्रकार शीलनता राजाई संस्कार है -यह जानकर इसे जीवन में सहज व स्वाभाविक रूप दे देना चाहिए।

रायपुर (छ.ग.)। नवनिर्मित विशाल स्टेडियम में आईपीएल-6 का मैच खेलने आए प्रसिद्ध भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी वीरेन्द्र सहवाग को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सविता।

झाड़ेश्वर (भरूच)। ब्र.कु.प्रभा द्वारा समाज के सभी वर्गों की नि:स्वार्थ भाव से आध्यात्मिक सेवा करने के लिए सम्मानित करते हुए रोटरी क्लब।